2

प्रकाशितवाक्य की सात बातें जो आपको पता होनी चाहिए

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अपने अध्ययन के स बन्ध में, दो में से कोई भी एक ढंग अपनाया जा सकता है: (1) वचन का अध्ययन तुरन्त आर भ किया जा सकता है। फिर मैं आपको बता सकता हूं कि आगे पढ़ते हुए आपको किस बात का पता होना आवश्यक है। (2) मैं बहुत सी बातें, जो आपको पता होनी आवश्यक हैं, बताने से आर भ कर सकता हूं। फिर वचन का अध्ययन करने पर, आप इसे समझने तथा इसकी सराहना करने के लिए अच्छे तरीके से तैयार हो जाएंगे। दोनों ही ढंगों के लाभ तथा हानियां हैं, पर मैंने दूसरे ढंग को चुनने का फैसला किया है, क्योंकि जहां तक हो सके, मैं बिना परेशानी के आपको प्रकाशितवाक्य की सैर कराना चाहता हूं।

इस शृंखला के पहले छह पाठों में मैं आपको वह जानकारी दूंगा, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझने के लिए आपको पता होनी आवश्यक है। इस पाठ में मैं वे सात बातें बताना चाहता हूं, जो पृष्ठभूमि के रूप में आपको पता होनी आवश्यक हैं।

1. इसका लेखक

अंग्रेज़ी के किंग जे स अनुवाद वाली मेरी बाइबल में, इस पुस्तक का शीर्षक "The Revelation of St. John the Divine" है।[1] परन्तु पुस्तक के आर भ शब्दों से हमें पता चलता है कि यह पुस्तक यूहन्ना का नहीं, बल्कि "यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य" है। यूहन्ना तो केवल यीशु का गवाह तथा सचिव था: "... [यीशु ने] अपने स्वर्गदूत को भेजकर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया, जिसने ... यीशु मसीह की गवाही, अर्थात जो कुछ उसने देखा था, उसकी गवाही दी" (1:1, 2)।

2. इसका लिखने वाला

प्रकाशितवाक्य का लिखने वाला स भवतया यूहन्ना प्रेरित था।[2] उसने अपना परिचय

यीशु के ''दास यूहन्ना'' के रूप में करवाया (1:1)। वह इतना प्रसिद्ध था कि उसने यह मानते हुए लिखा कि सभी उसे ''यूहन्ना'' पदनाम से ही पहचान लेंगे। नये नियम में प्रसिद्ध यूहन्ना प्रेरित यूहन्ना ही था।[3]

कलीसिया के आरंभिक दिनों से ही, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखी मानी जाती है। लेखक के रूप में उसका उल्लेख करने वालों में आरंभिक कलीसिया के अगुवे पेपियास (लगभग 135 ईस्वी), जस्टिन मार्टिन (लगभग 150 ईस्वी) और इरेनियुस (लगभग 185 ईस्वी) के नाम शामिल हैं। इन आरंभिक लेखकों के अनुसार, प्रेरित यूहन्ना यरूशलेम के विनाश के समय के आस-पास इफिसुस में चला गया (70 ईस्वी) और अगले पच्चीस वर्षों तक एशिया माइनर का प्रसिद्ध अगुआ रहा। वहां रहते हुए, उसे पतमुस नामक टापू पर निर्वासित कर दिया गया, जहां उसे यीशु से प्रकाशन मिला।

प्रकाशितवाक्य और प्रेरित यूहन्ना के अन्य लेखों में कई समानताएं देखी जा सकती हैं। केवल यूहन्ना ने ही यीशु को *logos* (''वचन''; यूहन्ना 1:1, 14; 1 यूहन्ना 1:1; प्रकाशितवाक्य 19:13) कहा। यीशु को ''परमेश्वर का मेमना'' (यूहन्ना 1:29, 36) कहना भी यूहन्ना का पसंदीदा ढंग था; प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यीशु को बाइस बार ''मेमना'' कहा गया है। यूहन्ना सुसमाचार की पुस्तकों का अकेला लेखक था, जिसने यीशु की पसली के बेधे जाने की बात लिखी (यूहन्ना 19:34), जो प्रकाशितवाक्य में भी लिखी गई है (1:7)।[4]

उसके अन्य लेखों तथा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की शैली में अन्तर के कारण कुछ लोग प्रेरित यूहन्ना द्वारा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे जाने के विचार को चुनौती देते हैं। हमें बताया गया है कि प्रकाशितवाक्य की शैली अधिक बेढंगी है और कुछ लोगों द्वारा इसे इस बात के सबूत के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि इस प्रेरित ने यह पुस्तक नहीं लिखी, परन्तु शैली में अन्तर के और कारण भी हो सकते हैं।

उदाहरण के लिए, *सामग्री अलग है:* दर्शनों को लिखना तथा संकेतों का विवरण देना यीशु के जीवन के वृत्तांत या पत्र लिखने की तरह नहीं है।

इसके अलावा, *अनुभव अलग था:* प्रकाशितवाक्य का अधिकतर भाग यूहन्ना द्वारा दर्शनों को देखते और आवाज़ें सुनते हुए लिखा गया। अपनी भावनात्मक स्थिति के बारे में, यूहन्ना ने कहा है, ''तब मैं फूट-फूट कर रोने लगा'' (5:4)। ऐसी मनोस्थिति से यूहन्ना के स्वयं को व्यक्त करने का ढंग प्रभावित हुआ।

इसके अलावा, *ढंग में अन्तर* की स भावना थी। पौलुस[5] और पतरस की तरह,[6] यूहन्ना ने भी सुसमाचार के अपने वृत्तांत के शब्द तथा पत्र दूसरों अर्थात उनकी सहायता से लिखे होंगे, जिन्हें लिखने की शैली तथा यूनानी भाषा का ज्ञान उससे अधिक था।[7] दूसरी ओर यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य के दर्शन अपने ही हाथ से लिखे होंगे (1:11, 19; 2:1, 8, 12, 18; 3:1, 7, 12, 14; 10:4; 14:13; 19:9; 21:5)।[8] फिर तो उसकी शैली का अलग होना स्वाभाविक ही है।

हमें इस स भावना पर भी विचार करना चाहिए कि *डिज़ाइन भी अलग था।* विद्वानों ने इस बात का अवलोकन किया है कि कहीं-कहीं प्रकाशितवाक्य की शैली बेढंगी हो सकती है, पर यह बहुत ही कम अस्पष्ट है। ऑस्टिन फैरर ने टिप्पणी की है, ''हम इस बात पर तो चकित होते हैं कि जो कुछ उसने लिखा, वह कैसे लिखा, परन्तु हम इस बात पर कभी हैरान नहीं होते कि उसके कहने का क्या अर्थ था।''[9] लियॉन मौरिस ने इस विचार पर बल दिया है:

> यूहन्ना यदि एक जगह व्याकरणीय नियमों को तोड़ता है तो अन्य जगहों पर वह उन्हीं नियमों का पालन भी करता है। अन्य शब्दों में, ऐसा प्रतीत होता है जैसे उसकी विशेष यूनानी अज्ञानता के सही रूपों के द्वारा न होकर किसी उद्देश्य से लिखी गई है।[10]

अन्य शब्दों में, पवित्र आत्मा ने किसी विशेष प्रभाव को पाने के लिए लिखने में प्रेरित यूहन्ना की अगुआई की होगी।[11]

मेरा निष्कर्ष यह है कि यह विश्वास करने के कि यूहन्ना प्रेरित ने ये शब्द लिखे, हमारे पास ढेरों कारण हैं-और कोई भी ऐसा कारण नहीं है कि हम यह मानें कि किसी अज्ञात यूहन्ना ने इसे लिखा।[12]

3. इसका समय

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक स भवतया डोमिशियन के शासन काल में, लगभग 94-96 ईस्वी में लिखी गई। यह पुस्तक स्पष्टतया कलीसिया पर भयंकर सताव के समय लिखी गई थी (2:13; 6:9; 12:17; 13:7), और अधिकतर लोगों का मानना है कि यह रोमी सरकार द्वारा सताए जाने के दौरान लिखी गई थी।[13] पहली शताब्दी के दूसरे भाग में मसीही लोगों को व्यापक रूप से सताने में नीरो और डोमिशियन नामक केवल दो सम्राट ही शामिल थे,[14] जिससे प्रकाशितवाक्य के इनमें से किसी एक के शासन के दौरान लिखे होने की स भावना अधिक है।[15]

बाइबल से बाहर की पर परा के अनुसार, यह पुस्तक डोमिशियन के शासन के अन्त में लिखी गई (81-96 ईस्वी)। 185 ईस्वी के लगभग, लिखते हुए इरेनियुस ने कहा था कि प्रकाशितवाक्य का ''सांकेतिक दर्शन बहुत समय से नहीं, परन्तु हमारे समय में ही डोमिशियन के शासन के अन्त में देखा गया।''[16] कलीसिया के अन्य आरि भक अगुवे (जैसे यूसबियुस) भी मानते थे कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक डोमिशियन के शासनकाल में 90 के दशक के अन्त में लिखी गई थी।

कुछ लोगों का मत है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक नीरो के शासन के अन्त (54-68 ईस्वी) में लिखी गई थी, परन्तु मेरे अध्ययनों में मिले प्रमाणों से पर परागत विचार को समर्थन मिलता है। उदाहरण के लिए, सताव के साम्राज्य के स्वभाव के अनुसार (3:10)।

नीरो के बजाय डोमिशियन के सताव से अधिक मेल खाता है। इसके अलावा, सात कलीसियाओं की स्थिति 60 के दशक के बजाय 90 के दशक के अन्त से अधिक मेल खाती लगती है। 60 के दशक में, इफिसुस की कलीसिया स्पष्टतया फल-फूल रही थी (देखें प्रेरितों 19 तथा 20; इफिसियों की पुस्तक), परन्तु प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने के समय, इफिसुस की कलीसिया ने अपना पहले वाला प्रेम छोड़ दिया था और मिटने के कगार पर थी (2:4, 5)। इसलिए मैं इन पाठों में, इसके लिखने का समय 90 के दशक के अन्त वाला ही इस्तेमाल करूंगा।[17]

4. इसका स्थान

प्रकाशन मिलने के समय यूहन्ना पतमुस नामक टापू पर था। उसे ''परमेश्वर के वचन और यीशु की गवाही के कारण पतमुस नामक टापू में'' निर्वासित किया गया था (1:9)। पतमुस ''आधुनिक तुर्की के तट पर इफिसुस से लगभग 50 मील (80 कि.मी.) अर्थात दक्षिण पश्चिम में एजियन सागर पर एक छोटा (चार गुणा आठ मील) पथरीला टापू था।[18] यहां पर रोमी शासकों द्वारा दण्ड दिया जाता होगा।''[19] सर विलियम रै से के अनुसार, निर्वासन ''कोड़े मारने के बाद, बेड़ियों में बांधे रखकर, थोड़े से कपड़े, अपर्याप्त भोजन, भूमि पर सोना, अंधेरी कोठरी और सैनिक निगरानों के चाबुक खाते हुए काम करना होता था।''[20]

5. इसके श्रोता

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उस समय की सात कलीसियाओं तथा हर युग के हर मसीही के लिए लिखी गई थी। प्रकाशितवाक्य विशेषकर ''इफिसुस और स्मुरना और पिरगमुन और थुआतीरा और सरदीस और फिलदिलफया और लौदिकिया'' (1:11) यानी ''आसिया की सात कलीसियाओं के नाम'' (1:4) लिखी गई थी।[21] ''आसिया'' यहां एशिया द्वीप को नहीं, बल्कि एजियन सागर के पूर्वी तट पर स्थित एशिया के रोमी क्षेत्र को (जो अब तुर्की का पश्चिमी तट है) कहा गया है। उस इलाके में सात से अधिक कलीसियाएं थीं,[22] परन्तु ये सातों कलीसियाएं स्पष्टतया उस समय (और आज) की मण्डलियों का चित्रण हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तो सात कलीसियाओं के नाम लिखी गई, परन्तु नये नियम की अन्य पुस्तकों के विशेष श्रोताओं के नाम लिखे जाने की तरह इसे भी व्यापक श्रोताओं को ध्यान में रखकर लिखा गया। अध्याय 2 और 3 में हर पत्र में यह संदेश है: ''जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है'' (2:7)। अपने दाएं-बाएं देख लें। क्या आपका कम से कम एक कान है? यदि है तो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आपके ही लिए लिखी गई थी!

6. इसका प्रकार

अध्याय 1 के अनुसार, प्रकाशितवाक्य का कुछ भाग अपोकलिप्टिक साहित्य, कुछ भाग भविष्यवाणी और कुछ भाग पत्री है:

(1) सबसे पहली बात तो यह है कि यह पुस्तक *अपोकलिप्टिक साहित्य* है। इसका आर भ ''यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य ... '' (1:1) वाक्यांश से होता है। ''प्रकाशितवाक्य'' यूनानी शब्द *apoklupsis* का अनुवाद है। कुछ अनुवादों में, इस पुस्तक का शीर्षक ''द अपोकलिप्स'' दिया गया है। अपोकलिप्टिक साहित्य अद्‌भुत प्रतीकों से भरपूर विशेष प्रकार की बातों का मेल है।

(2) इस पुस्तक को *भविष्यवाणी* भी कहा जाता है: ''धन्य है वह जो इस भविष्यवाणी के वचन को पढ़ता है'' (1:3; 22:7, 10, 18, 19 भी देखें)। भविष्यवक्ता ''परमेश्वर की किसी भी बात को बताने के लिए ग भीर, आज्ञा या निर्देश, इतिहास या भविष्यवाणी'' परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रवक्ता होते थे।[23]

(3) पुस्तक की शैली *एक पत्री* या पत्र जैसी ही है। आर भिक कथन के बाद, पुस्तक एक पत्री वाले अभिवादन में लौट आती है: ''यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम: उसकी ओर से जो है, और जो था, और जो आने वाला है; ...'' (1:4)।

आपने भविष्यवाणी और पत्रियों की बात तो सुनी होगी, पर ''अपोकलिप्टिक साहित्य'' से आप परिचित नहीं होंगे, सो आइए कुछ क्षणों के लिए इस पर चर्चा करते हैं कि यह क्या है। ''प्रकाशितवाक्य के बारे में जो सात बातें आपको मालूम होनी चाहिए'' उनमें से सबसे महत्वपूर्ण शायद यही है।

आपको ''अपोकलिप्टिक'' साहित्य का पता होना चाहिए।[24] (इसका उच्चारण ''अ-पोक-अ-**लिप**-टिक'' है। इसमें बल चौथे अक्षर यानी ''लिप'' पर दिया जाता है।) आज "apocalypse" (अपोकलिप्स) अन्त और विनाश का पर्यायवाची है, परन्तु यूनानी शब्द *apokalupsis* में यह अर्थ नहीं है। *Apokalupsis* का अर्थ ''परदा हटाना'' या ''प्रकाशन'' है।[25]

Apokalupsis का इस्तेमाल मूलत: किसी भी वस्तु के लिए किया जाता है, जिसका कालांतर में पता नहीं था, परन्तु अब प्रकट हो चुकी है (देखें गलातियों 1:12; 2:2[26])। तकनीकी अर्थ में इस्तेमाल करने पर ''अपोकलिप्टिक'' शब्द को साहित्य के विशेष प्रकार से अपनाया जाता है, जो पिछली दो शताब्दियों ईस्वी पूर्व और पहली शताब्दी ईस्वी के दौरान विकसित हुआ। इस शैली की एक विशेष बात यह है कि इसमें संदेश अनोखे और अद्‌भुत संकेतों द्वारा दिया जाता है।[27] अपोकलिप्टिक साहित्य में, संकेत संदेश को विस्तार ही नहीं देते, बल्कि वे स्वयं संदेश होते हैं।

संकेतों की बहुतायत आम तौर पर उस संसार से जुड़ी नहीं होती, जिससे हम परिचित हैं। बल्कि, कई तो बेतुके आभास होते हैं, जो हमें केवल दुस्वप्नों में ही दिखते हैं। यह बात अपोकलिप्टिक ढंग को आज के लोगों के लिए अद्‌भुत बना देती है। हमारी पत्रिकाएं

अपोकलिप्टिक भाषा में नहीं लिखी होतीं; हमारी पुस्तकें अपोकलिप्टिक भाषा में नहीं लिखी होतीं; हमारे समाचार पत्र अपोकलिप्टिक भाषा में नहीं लिखे जाते। इसलिए उस संसार में धकेले जाने पर जहां मनुष्य के मुंह से तलवार निकलती हो, जहां भड़कीले घुड़सवार पृथ्वी पर दौड़ते हैं और जहां अजगर इतना बड़ा हो कि उसकी पूंछ आकाश के तारों से टकराती हो, हम भयभीत हो जाते हैं!

परन्तु मूल पाठकों के लिए, अपोकलिप्टिक ढंग अनोखा या अद्‌भुत नहीं माना जाता था। पुराने नियम में, अपोकलिप्टिक भाषा का इस्तेमाल यहेजकेल और दानिय्येल की पुस्तक में अधिक मिलता है और यशायाह, योएल, जकर्याह तथा पुराने नियम की अन्य पुस्तकों में भी कहीं-कहीं इसका प्रयोग किया गया है। इसके अलावा पुराने और नये नियमों के मलाकी और मत्ती के बीच के चार सौ वर्षों के काल में, परमेश्वर की प्रेरणा से रहित अपोकलिप्टिक लेखों की भरमार है। रेअ समर्स ने कहा है:

> मसीही अपोकलिप्टिस्ट यूहन्ना अपने साथ दु:ख उठाने वाले साथियों को रोम के विनाश और परमेश्वर के काम की विजय की आशा दिलाकर, उन प्रसिद्ध घटनाओं की ओर जाने वाले पुराने मार्ग पर ले जा रहा था। अपनी कठिनाइयों के हल के लिए आत्मविश्वास से अपोकलिप्टिक रूपक की शरण लेकर वह ऐसे वातावरण में जा रहा था जो कई मसीहियों के अनुकूल था और वे अपने धर्म के इन यहूदी पूर्ववर्तियों से परिचित थे।[28]

इस पर आपका जवाब हो सकता है, ''अच्छा, तो वे इस प्रकार से आम तौर पर लिखते थे, परन्तु वे ऐसे *क्यों* लिखते थे? वे केवल सरल हिन्दी या सरल यूनानी में या उस समय की जो भी भाषा रही हो, उसमें अपनी बात क्यों नहीं कहते थे?'' अपोकलिप्टिक ढंग के इस्तेमाल के कई कारण हैं। लेखक अस भव काम को करने की अर्थात मनुष्यों के मामलों में परमेश्वर के हस्तक्षेप को बताने की कोशिश कर रहे थे। वे ''अवर्णनीय का वर्णन करने, अकथनीय को कहने, रंग न चढ़ने वाले को रंगने का प्रयास कर रहे थे।''[29] इसके अलावा, अपोकलिप्टिक भाषा के संवाद का प्रचलित ढंग होने के कारण, विलक्षण आकृतियों से संवाद में रुकावट के बजाय सहायता मिलती थी।

स भवतया सबसे महत्वपूर्ण बात राजनैतिक और धार्मिक माहौल था, जिस कारण इस प्रकार की लेखनी आवश्यक थी। जिस देश में अपोकलिप्टिक साहित्य विकसित हुआ, उसमें *संकट के समय* थे यानी बाबुल की दासता, यहेजकेल और दानिय्येल की पुस्तकें लिखने का आधार बनी थी। सीरिया के लोगों द्वारा दमन के कारण दोनों नियमों के कालों के दौरान धर्मशास्त्र से बाहर के अधिकतर लेख[30] अपोकलिप्टिक भाषा में लिखे गए। नीरो और डोमिशियन के शासन में रोमी सताव प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे जाने का आधार बना। बहुत से टीकाकारों का मानना है कि ''कठिन समयों की इन पुस्तिकाओं'' की भाषा का सांकेतिक[31] होने का दोहरा उद्देश्य है: (1) उन लोगों पर *प्रकट* करना, जिनके लिए

आर भ में लिखा गया था अर्थात जो संकेतों के अर्थ को समझ सकते थे और (2) जिनके लिए नहीं लिखा गया, उन से *छिपाना* था।[32]

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के संदेश पर विचार करें: पुस्तक में पहली शताब्दी के मसीही लोगों को आश्वस्त किया गया कि उनका दमन करने वाले, रोमी साम्राज्य का अन्त में पतन हो जाएगा। यदि रोमी अधिकारी इस संदेश को समझ लेते तो क्या होता? पहली बात तो यह कि यूहन्ना के लिए पतमुस पर इस पुस्तक की प्रतियां तैयार करना कठिन होना था (1:11)। क्योंकि कैदियों के पत्र व्यवहार पर नज़र रखने की प्रथा थी और है। दूसरी बात, रोमी अधिकारी इस संदेश के वितरण की अनुमति नहीं देते; जितनी भी प्रतियां, वे जब्त कर सकते, उन्होंने कर लेनी थीं। तीसरी बात, ऐसा दस्तावेज़ यह प्रमाणित करने के लिए प्रमाण के रूप में इस्तेमाल हो सकता था कि कैद में पड़े मसीही ही विद्रोह के दोषी हैं। ऐसा होने के कारण, यदि प्रकाशितवाक्य की कोई पुस्तक रोमी अधिकारी के हाथ लग जाती, तो मैं उन्हें इस लेख में झांकने और इसे ''और मसीही मूर्खता'' कहकर खारिज करने की कल्पना कर सकता हूं।[33]

अपोकलिप्टिक साहित्य के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। अभी के लिए, केवल अपने मन में इस विचार को रेखांकित कर लें कि अपोकलिप्टिक साहित्य में, संदेश *संकेतों द्वारा* ही दिया जाता है।

7. इसका समझ आना

परमेश्वर हम से प्रकाशितवाक्य को या कम से कम इसके मूल संदेशों को समझने की उ मीद करता है। दानिय्येल को दिए गए प्रकाशनों में जब वह उनके अन्त के निकट पहुंचा, तो उसे बताया गया था, ''परन्तु हे दानिय्येल, तू इस पुस्तक पर मुहर करके इन वचनों को अन्त समय तक के लिए बन्द र ा।...'' (दानिय्येल 12:4)। दानिय्येल की भविष्यवाणियों की कई बातें भविष्य में बहुत देर बाद पूरी होनी थीं,[34] इसलिए उस नबी के समय रहने वाले लोगों से इस पुस्तक को समझने की उ मीद नहीं की जा सकती थी (देखें दानिय्येल 8:27)। इसके विपरीत, यूहन्ना को आज्ञा दी गई थी, ''इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातों को *बन्द मत कर,* क्योंकि समय निकट है'' (22:10)। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का पूरा होना तुरन्त आर भ हो गया था (1:1, 3) और इसे पढ़ने वालों से इसे समझने की उ मीद की गई थी (देखें 13:18)।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम पुस्तक की हर बात को समझ सकते हैं। अध्याय 10 में गर्जन के सात शब्द हैं। यूहन्ना ने कहा कि वह, वह सब लिखने वाला था, जो उन्होंने कहा, जब उसने ''स्वर्ग से यह शब्द सुना कि जो बातें गर्जन के उन सात शब्दों से सुनी हैं, उन्हें *गुप्त रख,* और मत लिख'' (प्रकाशितवाक्य 10:4)। पुस्तक में यह संदेश शायद हमारे मनों में यह डालने के लिए है कि कई बातें हैं, जो हमें पता नहीं हैं और न कभी पता चलेंगी (देखें व्यवस्थाविवरण 29:29)।

तौ भी, हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की *कुछ* बातों को समझ सकते हैं, और परमेश्वर हम से उन्हें समझने की *उ मीद* करता है। यह पुस्तक ''प्रकाशन'' बनने के लिए लिखी गई है न कि ''रहस्य'' बनने के लिए। यदि हम पुस्तक की मु य शिक्षा को नहीं समझ पाते, तो हम उन लोगों को दी गई प्रतिज्ञा की आशीष नहीं पा सकते ''जो इस भविष्यवाणी के वचन को सुनते हैं और इसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं'' (1:3)। इस अध्ययन में हमारे सामने उन सबको ढूंढ़ने की चुनौती होगी, जो परमेश्वर हमें सिखाना चाहता है।

सारांश

कई साल पहले, एक मसीही युवक मुझ से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ाने का आग्रह करता रहा। वह मुझे लगातार यह बताता रहा कि वह इस पुस्तक का अध्ययन करने को बहुत ही उत्सुक है। अन्त में उसकी बात मानकर मैं सिखाने लगा। अध्ययन करने के कई सप्ताह बीत जाने पर वह त्यौरियां चढ़ाते हुए मेरे पास आया। उसके स्वर में निराशा थी, जब उसने कहा, ''यह कठिन *है,* है न?''

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आधे मन से इसके पास आने वालों को अपने भण्डार में से कुछ नहीं देती। बाइबल की कुछ क्लासों में आधा सुनकर/आधी खुराक खाकर आप कुछ आवश्यक बातें सीख सकते हैं, परन्तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक बार में बात नहीं बनेगी, यदि आप इस अध्ययन से लाभ उठाना चाहते हैं तो आपको कई क्लासें लगाने के लिए तैयार होना आवश्यक है। यह मैं आपको प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने से निराश करने के लिए नहीं, बल्कि इस अद्‌भुत पुस्तक से आशीष पाने के लिए आवश्यक प्रयास करने को दृढ़ संकल्प होने के लिए प्रोत्साहित करने को कह रहा हूं। ऐसा करने पर आपको प्रसन्नता होगी कि आपने ऐसा किया!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

बीच-बीच में, पाठों के वचनों में चित्र भी जोड़े जाएंगे। आप इन टुकड़ों को बड़ा कर किसी बड़े कागज़ पर या बोर्ड पर विज़ुअल एड के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

पाठ में जोड़ने के लिए अधिकतर सामग्री रूपरेखा के रूप में दिखाई जा सकती है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य तथा प्रेरित यूहन्ना के अन्य लेखों की शैली में अन्तर के लिए स भावित कारणों पर चर्चा करते हुए मैं चार्ट 1 का इस्तेमाल करता हूं:

शैली में अन्तर क्यों?

सामग्री में अन्तर-
दर्शन, संकेत
अनुभव में अन्तर-

एक भावनात्मक जोश से भरी स्थिति

प्रकाशितवाक्य स भवतया ''उसी समय'' लिखी गई

ढंग में अन्तर–

अन्य लेख:

स भवतया यूहन्ना ने किसी लिखने वाले का इस्तेमाल किया।

प्रकाशितवाक्य:

स भवतया यूहन्ना ने यह पुस्तक अपने हाथ से लिखी।

परिकल्पना या डिज़ाइन में अन्तर ?

शैली में अन्तर जान–बूझकर किया गया हो सकता है।

इस बात का परिचय देने के लिए कि प्रकाशितवाक्य हर हाल में सबसे पहले, अपोकलिप्टिक साहित्य है, पोस्टर पर लगाने के लिए कुछ जानकारी यह है।

पुस्तक का प्रकार

अपोकलिप्टिक साहित्य–

भविष्य के बारे में सांकेतिक शिक्षा

भविष्यवाणी–

वर्तमान के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से

पत्री–

विशेष श्रोताओं के नाम पत्र, जो इसे *व्यक्तिगत* बना देता है

इस सामग्री का अध्ययन करते हुए, अपने आप से यह प्रश्न पूछते रहें: ''मैं इस जानकारी को चार्ट के रूप में कैसे दिखा सकता हूं, जिससे मेरे छात्र इसे और अच्छी तरह से समझ सकें ?''

जैसा कि मैंने इस पाठ के आर भ में कहा था, मैं प्रकाशितवाक्य के वचन के साथ आर भ करने से पहले एक पक्का आधार बनाने के लिए समय देना चाहता हूं। क्लास में समझाने के लिए इसका बड़ा लाभ होता है, यानी हो सकता है कि प्रकाशितवाक्य पर प्रवचनों की शृंखला में प्रचार करने में इसका अधिक लाभ न हो। यदि आप इस सामग्री का इस्तेमाल प्रवचनों में करना चाहते हैं, तो एक से तीन पाठों में सबसे उलझन वाली सामग्री का परिचय दें। फिर वचन में से प्रचार करते हुए शेष सामग्री को शामिल कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अध्याय 1 से वचन बताते हुए, आप इन बातों को शामिल कर सकते हैं कि इसका लेखक कौन है, इसे किसने लिखा, यह पुस्तक किसके नाम लिखी गई और अन्य आर्र भक जानकारी।

टिप्पणियां

[1]NKJV ''The Revelation of Jesus Christ'' है। [2]वे लोग जिन्हें आप सिखाते हैं, यदि प्रेरित यूहन्ना से अपरिचित हैं, तो पहले आप उन्हें उसके जीवन के बारे में कुछ मिनट बताएं। [3]आज की तरह ही उस समय भी यूहन्ना एक साधारण नाम होगा। परन्तु नये नियम में केवल दो यूहन्ना नामक मसीहियों का नाम है: प्रेरित यूहन्ना (पहले उसका नाम मत्ती 4:21 में है) और यूहन्ना मरकुस (देखें प्रेरितों 12:12)। [4]अन्य समानताओं पर ध्यान दिलाया जा सकता है: प्रकाशितवाक्य 1:1 की तुलना यूहन्ना 17:7, 8 से करें (यूहन्ना 5:19, 20; 7:16 भी देखें)। यूहन्ना 7:37/प्रकाशितवाक्य 22:17; यूहन्ना 10:18 / प्रकाशितवाक्य 2:27; यूहन्ना 20:12/ प्रकाशितवाक्य 3:4; यूहन्ना 21:24/ प्रकाशितवाक्य 22:8 की तुलना करें। [5]पौलुस अपने पत्र किसी दूसरे से लिखवाता था (रोमियों 16:22)। जहां कहीं उसने अपने हाथ से लिखा, वहां उसने इसका विशेष उल्लेख किया (गलातियों 6:11)। [6]पतरस ने अपनी पहली पत्री सीलास से लिखवाई (1 पतरस 5:12)। [7]पत्रों के इन लिखने वालों के लिए तकनीकी शब्द ''लिपिक'' है, और प्रचलित शब्दों में ''सचिव,'' ''मुंशी,'' और ''साहित्यिक सहायक'' हैं। [8]निश्चय ही यह सब पवित्र आत्मा की अगुआई में किया गया, ताकि अन्तिम परिणाम वही हो, जो परमेश्वर चाहता था। [9]ऑस्टिन फैरर, *द रैवलेशन ऑफ़ सेंट जॉन द डिवाइन* (लंदन: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1964), 50. [10]लियॉन मौरिस, *रैवलेशन,* संशो. संस्क. द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिडस मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 31.

[11]परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वालों के स बन्ध में व्याकरण में ''गलतियों'' और ''त्रुटियों'' की बात अनुपयुक्त है। व्याकरण के ''नियम'' मनुष्य ने बनाए हैं, न कि परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए हैं। मेरे लेखों की व्याकरणीय त्रुटियों को दूर करने की स पादकों को छूट है, परन्तु पवित्र आत्मा के लेखों में ऐसा करने से पहले हमें सौ बार सोच लेना चाहिए। [12]''किस यूहन्ना?'' के प्रश्न का उत्तर निश्चय ही हमें यीशु के संदेश से लाभ देने के लिए निर्णायक नहीं है। हमें पक्का पता नहीं है कि इब्रानियों की पुस्तक किसने लिखी, परन्तु इससे इसकी शिक्षाओं से मिलने वाले संदेश पर कोई असर नहीं होता। [13]जैसा कि हम अगले पाठों में देखेंगे, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के कई ''सूत्र'' रोमी साम्राज्य की ओर उंगली करते हैं। [14]इस पुस्तक में आगे ''महत्वपूर्ण चिह्न और आश्चर्यजनक संकेत'' पाठ में रोमी साम्राज्य के इतिहास की समीक्षा देखें। [15]हमारा मानना है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक वेस्पेसियन के काल (69-79 ईस्वी) में लिखी गई और इसमें वेस्पेसियन के पूर्वाधिकारी नीरो ओर वेस्पेसियन के पुत्र डोमिशिनयन द्वारा किए जाने वाले सताव की बात है। यह विचार मु यतया समुद्र से निकलने वाले पशु के सात सिरों की यूहन्ना की गुप्त ''व्या या'' के आधार पर है (13:1; 17:9-11)। 17:9-11 की हर व्या या की अपनी समस्याएं हैं। यह एक अस्पष्ट पद है, जिस पर कोई भी निर्णय लिया जाता है। [16]इरेनियुस *अगेंस्ट हेयरसीज़* 5.30. [17]यह समझ आ जाना चाहिए कि इसके लिखने का सही-सही समय एक या दो विवरणों की व्या या को प्रभावित कर सकता है, यह पहली शताब्दी के मसीही लोगों या आज के मसीहियों के लिए पुस्तक के स पूर्ण संदेश को प्रभावित नहीं करता। [18]इस पुस्तक में आगे ''आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू'' का मानचित्र देखें। [19]रॉबर्ट माउंस, नोट्स ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशसन, *द NIV स्टडी बाइबल,* सामा. संस्क. कैनथ बार्कर (ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1926. [20]डब्ल्यू एम. रैमसे, *द लैटर टू सैवन चर्चस ऑफ़ एशिया,* विलियम एम. रैमसे लाइब्रेरी, अंक 10 (पृष्ठ नहीं, 1904; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 85. पुस्तक लिखने के समय यूहन्ना बहुत बूढ़ा हो चुका होगा; मालूम नहीं कि पतमुस में उसे खदानों पर काम करने के लिए विवश किया जाता था या नहीं।

[21]उन नगरों के स्थान के लिए मानचित्र देखें जहां वे मण्डलियां इकट्ठी होती थीं। [22]आसिया के इलाके

की अन्य मण्डलियों में त्रोआस, कुलुस्से और लौदीकिया में इकट्ठी होने वाली मण्डलियां थीं (प्रेरितों 20:6, 7; कुलुस्सियों 1:2; 4:16)। [23]माउंस, 1926. [24]इसे ''अपोक्रिफा'' से न उलझाएं जिसका अर्थ ''छिपा हुआ'' है। ''अपोक्रिफा'' 200 ई.पू.-100 ईस्वी के आस-पास परमेश्वर की प्रेरणा रहित बने कई दस्तावेज़ों को कहा जाता है। [25]यह ''ढकने'' और ''से'' या ''परे'' के लिए यूनानी शब्दों को मिलाता है; इस प्रकार इसका मूल अर्थ ''खोलना'' है। [26]अन्य उदाहरणों के लिए, देखें रोमियों 2:5; 16:25; 1 कुरिन्थियों 14:6; इफिसियों 3:3; 1 पतरस 1:7, 13; 4:13. [27]''संकेत'' शब्द की परिभाषा और व्या या ''यहां अजगर होते हैं!'' पाठ में की गई है। [28]रेअ समर्स, *वरदी इज़ द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951),16. [29]लिविलियम बार्कले, द *रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 1, संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 4. [30]इस पुस्तक में आगे ''धर्मशास्त्र का प्रश्न'' पर अतिरिक्त लेख देखें।

[31]एडवर्ड ए. मैक्डोवल, *द मीनिंग एण्ड मैसेज ऑफ़ द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 7. [32]यदि आपके छात्र यीशु के दृष्टांतों के उद्देश्य से परिचित हैं, तो आप यहां एक समानता बना सकते हैं। हम अक्सर कहते हैं कि यीशु अपने संदेश को सरल बनाने अर्थात अपने संदेश को *प्रकट* करने के लिए दृष्टांतों में बात करता था। यह सत्य था, परन्तु उसने यह भी कहा कि वह दृष्टांतों में अपने संदेश को उन से *छिपाने* के लिए बात करता था, जो इसे ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं थे (देखें मत्ती 13:10-17)। [33]अपोकलिप्स के उद्देश्य को ''छिपाने'' का स्पष्ट उद्देश्य अध्याय 17 में मिलता है। ''बड़े बाबुल'' को ''बड़ा नगर, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' (आयत 18) अर्थात वह नगर कहा गया है, जो ''सात पहाड़ों'' पर बसा है (आयत 9)। जो ऐसा संकेत है कि स्पष्ट रूप से रोम नगर की ही बात है। प्रभु ने शायद घुमा फिराकर बात करने के बजाय इस विशेष संकेत के इतना महत्वपूर्ण होने के कारण सीधे-सीधे बताना चुना। [34]उदाहरण के लिए दानिय्येल द्वारा पहले से बताई गई भविष्य की एक घटना कलीसिया/राज्य की स्थापना थी।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. पुस्तक का असली लेखक कौन है (1:1 में बताए अनुसार)? अन्य शब्दों में, यह किसका प्रकाशन है?
2. प्रकाशितवाक्य लिखा किसने (1:1)?
3. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तथा प्रेरित यूहन्ना के अन्य लेखों की शैली में अन्तर के कुछ स भावित कारण बताएं।
4. प्रकाशितवाक्य के लिखे जाने के लिए इस पाठ से कौन सी तिथि (यों) या समय का सुझाव मिलता है?
5. उस समय रोमी सम्राट कौन था?
6. प्रकाशितवाक्य मिलने के समय यूहन्ना कहां था?
7. यह पुस्तक किसके नाम लिखी गई?
8. मु यतया प्रकाशितवाक्य किस प्रकार का साहित्य है (1:1 के अनुसार)?
9. अपोकलिप्टिक साहित्य में, संदेश कैसे भेजा जाता है?
10. अपोकलिप्टिक साहित्य के लिए आम तौर पर कैसी सामाजिक स्थिति ज़ि मेदार थी?
11. सुझाव दिया गया है कि अपोकलिप्टिक साहित्य का दोहरा उद्देश्य था। यह दोहरा

उद्देश्य क्या था ?

12. क्या परमेश्वर हम से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझने की उ मीद करता है ? क्या इसका अर्थ यह है कि हम इस पुस्तक की *हर बात* को समझ सकते हैं (या हमारे लिए समझना आवश्यक है) ?

धर्मशास्त्र का प्रश्न

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के समय से कलीसियाओं में वितरित किए जाने तक इसे प्रेरित यूहन्ना की कलम से लिखी गई प्रमाणिक पुस्तक माना जाता था। इसे नये नियम की परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई पुस्तकों के आर भक संग्रह में शामिल किया जाता था। 165 ईस्वी के लगभग थियोफिलुस ने इसे कैनन[1] में स मिलित किया। यूरेटोरियन कैनन (लगभग 170 ईस्वी) में इसकी बात की गई। यदि सभी नहीं तो आर भक कलीसिया के अधिकतर अगुवे इसी में से उद्धृत करते थे। इस प्रकार अरल पाल्मर ने यह अवलोकन किया:

> ... प्रकाशितवाक्य नये नियम की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक प्राचीन कलीसिया के अधिक स्रोतों द्वारा प्रमाणित है। आर भक कलीसिया के उपलब्ध अधिकतर प्राचीन प्रमाण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए व्यापक आधार वाला समर्थन दिखाते हैं और इसे कैनन के भाग के रूप में मानते हैं।[2]

कुछ समय बाद, कुछ लेखकों ने आलोचना करके व्यक्तिगत (उदाहरण के लिए, कुछ ने संकेतवाद को निराशाजनक पाया) और शैली के कारणों से इस पुस्तक को नकार दिया, परन्तु कुल मिलाकर आर भक कलीसिया इसे बिना किसी संदेह के परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया वचन मानती थी।

आसिया की सात कलीसियाएं और पतमुस टापू